अब तो मेरे पिया की

अब तो मेरे पिया की, दया न समावे इंड।
ए गुन मुझे क्यों विसरे, मोसों हुए सब अखंड।
सोहागनियों पिया दया गुन कैसे कहूँ।।टेक।।

अब गली मैं दया मिने, सागर सरूपी खीर।
दया सागर भर पूरन, एक बूंद नहीं मिने नीर।।

एते दिन हम घर मिने, गोप राखी सत जोत ।
अब बुध खेंचे तरफ अपनी, तो जाहेर सत होत।।

हिस्सा देऊं आवेस का, सैंयन को सब पर।
होसी मनोरथ पूरन, मिल हरखे जागसी घर।।

अब साथ न छोडूं एकला, साथ मुझे छोड़े क्यों।
कह्या मेरा साथ न लोपे, साथ कहे करूं मैं त्यों।।